

धर्मरत्न ब्रह्माचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 160

५३७

2

१७ गङ्गा लक्ष्मि हस्त वास्य
काप नक्षत्रा विहगल सखा
यक्ष विहगल मातृ पञ्चनक्षत्र

ॐ
क स न
द्वन्द्वस्वराः॥
उ रु ङ

वि० १ दधुसतस्य वाहन ककुनिनवाय॥
पादं पौष्टं, अहं कायनिनसवान
विष्टं, काखायकं, याकासतं
विस्वमजाल नानाजाल, लक्षण
यादौ लिङ्ग नकाथ॥

दृ १ दधुसतस्य वाकडस कुरुपवासी
लकनूयोजातं, कुरुकायनसवानाव
डाडा जसविनाजातय, भेनवानइया
दधुजानका॥

दा १ दधुसतस्य, मूचामइवित्पानिना
यासनविष्टं, हाककायासविष्टं
काखायकं, याकासाततं, अ
विवालयनात नका, मवइविनाडाख
लीकयालि॥

दी १ दधुसतस्य, कपल ग्रीखंदककुनि
मसिनवासी, काखायकं कुरुनयं इ,
छाक २ दडोयादाखननासनकाथ॥

ह १ दधुसतस्य काहकायनिनसवासी
ग्यनवेकमनि, नडां गिरासूया ककु
अतसधुमोधा, अतनपादं पंचसूजन
लिङ्गं, काखायकं, याकासवानियालय
नागनासनका, मनकयालयमइ॥

वि १ दधुसतस्य प्रयाहिनयाथैजधमवाना
आसनय पूनपूयमहु, थडा कुरुतयाडा, पू
लजानता, मेवनमखनकं खयहु ५५ वि
यनका॥

ह १ दधुसतस्य, हउलि जसिनवासी
प्रोधाननपादं नूखाहु सग तय, म
नूकआदिन, पसूखाविनसिद्धयान
जा॥

आ १ दधुसतस्य कावियाहउलि
नवासी, मधुयानगलयाहु उलिस
पानविष्टं, काखायकं, कायवाडा
दुष्णीतीवाडायानका॥



दथसतस्य रुधननयाई, दथस
 नूदुल १ तस्य कोखाय के इच्छत
 तय ई लखसासिक क्रया दाव
 ननास नजा॥

२७

दथसतस्य रु



ध दथसतस्य कोखाया डी डी न
 वननना रुदयु डी नजा॥



ध दथसतस्य द (म प ड व
 मान डी डी या ई उ तय मा हा
 माय पिथ्म रुया सिकया॥



५३७

सूक्त

धर्मरत्न बजाचाय सुस्त श्री महाविहार DH160

श्रीवज्रवारा
ही

श्रीसु

हकनीथिक





ॐ नमः श्री कृष्ण वा नाथे ॥ ॥ राग कीर्ति दिग्ब्रह्म कृष्ण कृष्ण दिग्ब्रह्म कृष्ण

वराह मसीहा मसीहा